वेदान्त दर्शन पर

अति अद्भुत गोविन्द भाष्य के प्रणेता

श्रील बलदेव विद्याभूषण

को

आलोचकों द्वारा 'भगवद्गीता यथारूप' की प्रशंसा

(अंग्रेजी संस्करण)

"इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि यह संस्करण गीता तथा भक्ति के विषय में प्राप्त समस्त ग्रंथों में सर्वश्रेष्ठ है। प्रभुपाद द्वारा किया गया यह अंग्रेजी अनुवाद शाब्दिक यथार्थता तथा धार्मिक अन्तर्दृष्टि का आदर्श मिश्रण है।"

डॉ. थॉमस एच. हॉपकिन्स

अध्यक्ष, धार्मिक अध्ययन विभाग
फ्रेंकलिन तथा मार्शल कालेज

"गीता को विश्व की सबसे प्राचीन जीवित संस्कृति, भारत की महान धार्मिक सभ्यता के प्रमुख साहित्यिक प्रमाण के रूप में देखा जा सकता है। प्रस्तुत अनुवाद तथा टीका गीता के चिरस्थायित्व की अन्य अभिव्यक्ति है। स्वामी भक्तिवेदान्त पाश्चात्य जगत को स्मरण दिलाते हैं कि हमारी अत्यधिक क्रियाशील तथा एकांगी संस्कृति के समक्ष ऐसा संकट उपस्थित है, जिससे आत्म-विनाश हो सकता है क्योंकि इसमें मौलिक आध्यात्मिक चेतना की गहराई का अभाव है। ऐसी गहराई के बिना हमारे चारित्रिक तथा राजनीतिक विरोध शब्दजाल बनकर रह जाते हैं।"

थॉमस मर्टन

लेट कैथॉलिक थियोलॉजियन, मॅङ्क, लेखक

"पाश्चात्य जगत में भारतीय साहित्य का कोई भी ग्रंथ इतना अधिक उद्धरित नहीं होता जितना कि भगवद्गीता, क्योंकि यही सर्वाधिक प्रिय है। ऐसे ग्रंथ के अनुवाद के लिए न केवल संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है, अपितु विषय-वस्तु के प्रति आन्तरिक सहानुभूति तथा शब्दचातुरी भी चाहिए। श्रील भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद निश्चित रूप से विषय-वस्तु के प्रति अतीव सहानुभूतिपूर्ण हैं। उन्होंने भक्ति परम्परा को एक नवीन तार्किक शक्ति प्रदान की है। इस भारतीय महाकाव्य को नया अर्थ प्रदान करके स्वामीजी ने विद्यार्थियों के लिए असली सेवाकार्य किया है। उन्होंने जो श्रम किया है उसके लिए हमें उनका कृतज्ञ होना चाहिए।"

डॉ. गेड्डीज मैकग्रेगर

दर्शन के विख्यात प्रतिष्ठित प्रोफेसर